4

गिराया गया, पर चित्त नहीं हुआ

(2 कुरिन्थियों 4:7-15)

*''... यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं,
वरन परमेश्वर की ओर से ठहरे ...'' (4:7)।*

कई साल पहले मैं अपने परिवार के साथ संसार में कला के सबसे बड़े भण्डारों में से कुछ को निहारते हुए, लोवरे अजायब घर में से गुज़र रहा था। हम एक भीड़ के पास आए जो एक पेंटिंग के इर्द-गिर्द इकट्ठा थी। यह पेंटिंग शीशे के बॉक्स में रखी गई थी। एक गार्ड पास खड़ा था। जब हम पेंटिंग को देखने के लिए और निकट आए तो हमने पहचान लिया कि यह मोनालीसा की प्रसिद्ध पेंटिंग है। इस शानदार हॉल में कला के बड़े-बड़े भण्डारों में से एक यह बेशकीमती खज़ाना था। इसे चोरी, टूट-फूट और प्रशंसकों की पहुंच से बचाकर रखा गया था। कला के अद्वितीय काम को सम्भालकर रखने का एकमात्र उपयुक्त ढंग शीशे के पीछे सम्भालकर रखना ही पड़ा।

मैंने अजायब घरों में अपने खज़ाने को सम्भालकर रखने के लिए ली जाने वाली सावधानियों को आमतौर पर देखा है। राजा टूट के खज़ानों को देखने के लिए जाने वाले हज़ारों लोगों ने शीशे के पीछे कला के उन नमूनों को सम्भालकर रखने में किए जाने वाले प्रयास को देखा। कोई जिम्मेदार व्यक्ति किसी के मूर्खतापूर्वक कार्य से तीन हज़ार साल पुराने खज़ाने को खराब होने की अनुमति नहीं देगा। अजायब घरों में हर जगह, यदि पेंटिंग को शीशे में सम्भालकर नहीं रखा जाता तो उन्हें सुरक्षा के इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों से सम्भालकर रखा जाता है, जो छूने पर आवाज़ करने लगते हैं। हर प्रकार के खज़ाने, अजायब घरों में हो या घरों में, को विशेष सम्भाल की आवश्यकता होती है क्योंकि किसी बेशकीमती चीज़ को खराब होते देखना बहुत बुरा लगता है।

यह तथ्य 2 कुरिन्थियों 4:7 के शब्दों के चौंकाने वाले प्रभाव के तथ्यों को बताता है: ''हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, ...।'' पौलुस के समय में मिट्टी का सस्ता सा बर्तन होता था। पुरातत्वविदों को जो कुरिन्थुस जैसे प्राचीन नगरों की खुदाई करते हैं। मिट्टी के इन बर्तनों और जारों के हज़ारों टुकड़े मिलते हैं। ये ''न गलने वाली'' चीज़ें आमतौर पर यूं ही छोड़ दी जाती हैं, शायद इसलिए, क्योंकि वे बहुत अधिक मात्रा में और सस्ती होती थीं। जैसा कि इन असंख्य टुकड़ों से पता चलता है कि यह बर्तन और जार विशेषकर टूटने वाले होते थे। यह खाना रखने के लिए उपयोगी तो थे पर कोई इनमें से किसी को खज़ाने में रखने की बात कभी नहीं सोचता था। खज़ाने में कोई ऐसी चीज़ होती थी, जिसे प्रकृति की शक्तियों या मनुष्य के लालच से बचाकर रखा जाए। इस कारण पौलुस ने कहा, ''हमारे पास यह धन मिट्टी के बर्तनों में रखा है,'' तो वह एक अद्भुत नज़ारे के बात कर रहा था।

धन

''हमारे पास'' जो धन है, वह सुसमाचार की सेवकाई है। हमारे इस संदर्भ में पौलुस ने उस प्रकाश की बात की है जो ''हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो'' (4:6)। ''ज्योति'' यह घोषणा है कि यीशु मसीह प्रभु है (4:5)। जब पौलुस उस धन की बात करता है, जो ''हमारे पास'' है, तो इस तथ्य पर विशेष ज़ोर दिया जाता है कि यह धन हमें दिया गया था। कई बार वह उन आशिषों की बात करता है, जो मसीही लोगों को ''मिली हैं'' (3:4, 12; 4:1)। हर घटना में वह कहता है, कि ये आशिषें दान के रूप में दी हैं। 4:1 में वह कहता है, ''इसलिए जब हम पर ऐसी दया हुई कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हियाव नहीं छोड़ते।'' इस प्रकार से परमेश्वर का धन हमारा है, क्योंकि परमेश्वर ने इसे हमारे हाथ में दिया।

सुसमाचार की अच्छी खबर के लिए बाइबल में ''धन'' पसंदीदा रूपक है। यीशु ने एक बार कहा था कि ''स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है'' (मत्ती 13:44)। उसने एक जुड़वा दृष्टांत बताया, जिसमें स्वर्ग के राज्य को ''एक बहुमूल्य मोती'' से मिलाया गया (मत्ती 13:46)। पौलुस ने लिखा कि मसीह में ''बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए'' हैं (कुलुस्सियों 2:3)। इस रूपक का इस्तेमाल आमतौर पर किया जाता था, क्योंकि इसमें सुसमाचार का एक महत्वपूर्ण संदेश है कि सुसमाचार की कीमत इतनी बड़ी है कि कोई इसे हल्के से नहीं ले सकता। यह कोई अचानक होने वाली बात नहीं है कि सुसमाचार को धन या भण्डार से मिलाया गया, न कि किसी सस्ती चीज़ से। दृष्टांत वाले व्यक्ति को जब धन और मोती मिल गया तो उसने जो कुछ अपने पास था उस सब को इस एक चीज़ को पाने के लिए बेच दिया। इस दृष्टांत में सुसमाचार की असीम कीमत का सुझाव मिलता है। जब हमें इसका पता चल जाता है तो हमें उस भण्डार का पता चल जाता है, जिसके लिए हम सब कुछ गंवाने को तैयार होते हैं।

ऐथंस, ग्रीस के राष्ट्रीय अजायब घर में बारहवीं शताब्दी ई.पू. तक के पुराने सोने के भण्डार हैं, जो ट्रॉजन युद्ध की दंत कथाओं में वर्णित हैं। 19वीं शताब्दी के अन्त में हेनरिक शलियमन ने बार-बार यह बताए जाने पर कि उस वीरतापूर्ण युग के निशान फिर कभी नहीं मिलेंगे, इन खज़ानों को ढूंढ़ा। बेशक उसे ध्यान नहीं था कि उसे इतने शानदार खज़ाने मिल सकेंगे। पर यह उसके जीवन का जुनून था। उसने पुरातत्वीय खोजों के लिए अपना आप लगा दिया, क्योंकि यूनानी खज़ानों के स्वप्न से बढ़कर उसके लिए कोई प्रेरणा नहीं थी।

यीशु को मालूम था कि हमें धन मिला है। हम या तो उस धन को लेना चुन सकते हैं, जिसे चुराया जा सकता है या जो खराब हो सकता है या उस धन को या स्वर्ग को जिसे चुराया नहीं जा सकता। उसने कहा, ''जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा'' (मत्ती 6:21)। पौलुस को यकीन था, मसीह के लिए हमारी सेवकाई के साथ हमारे पास ''यह धन है।''

मसीही व्यक्ति की पहचान इस बात को समझना है कि उसके हाथ में एक खज़ाना दिया गया है। हमारे सामने अपनी सेवकाई को गम्भीरतापूर्वक लेने की परीक्षा बनी रहती है क्योंकि हम उन से बहुत कम उम्मीद रखते हैं। कई काम बार-बार करना और उन्हें पहचान न मिलना सेवकाइयों को उकताहट भरी बना देता है। कुछ ही मण्डलियां हैं जिनमें अस्पतालों में जाना, दुखी लोगों के पास जाना, लोगों के घरों में जाने वाली टीम के साथ काम करने की महत्वपूर्ण

सेवकाइयां धीरे-धीरे दम नहीं तोड़ रही हैं। जोश आम तौर पर शुरू करने के बाद घटने लगता है।

कई मामलों में जिस बात की कमी है, वह यह याद दिलाना है कि इन गतिविधियों में हमारे पास खज़ाना है। यदि हमारा खज़ाना अपनी सेवकाई के साथ है तो निश्चित रूप में हम एक महत्वपूर्ण सेवकाई के लिए अपने समर्पण को छीनने की अन्य मांगों को अनुमति नहीं देंगे। जेम्स एस. स्टुअर्ट, प्रसिद्ध स्कॉटिक्स प्रचारक ने उपयुक्त प्रश्न पूछा है कि आज कलीसिया को अपने सुसमाचारीय मिशन के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता क्या है ? वह उत्तर देता है:

> और आधुनिक तकनीकें, नि:संदेह, और आधुनिकत्म तरीके और कलीसियाई जीवन के और समसामयिक ढांचे, और नवीनतम मशीनरी, परन्तु मुख्यतया यह निश्चित रूप से उस धन की जो हमारे पास है कहीं अधिक गहरी समझ, अर्थात उन अलौकिक, मानवीय अनुभव से ऊपर के संसाधनों को उत्साहपूर्ण अपनाना है कि हम जी उठें और प्रभु में विश्वास दिखाते रहें।[1]

अधिक समय नहीं हुआ, जब मैंने कलीसिया के कार्यक्रमों में अपने पति के भाग लेने पर एक स्त्री से उसकी टिप्पणी सुनी थी। उसने उसके भाग लेने को यह कहते हुए बताया कि उसका पालन पोषण मसीही वातावरण में नहीं हुआ। उसे सुसमाचार का पता व्यस्क होने पर और मसीही लोगों की एक स्थानीय मण्डली में ही चला। उसने मसीही जीवन को कभी लापरवाही से नहीं लिया। इस कारण उसके लिए इसका विशेष महत्व था! पौलुस के शब्दों में कहें तो उस आदमी को खज़ाना मिल गया था। कलीसिया की कई समस्याओं को समझने के लिए हमारे ढंग में दिक्कत यह है कि हम उनके आदि हो चुके हैं। खज़ाने के पास अधिक देर तक रहने वालों को उसकी असली कीमत भूल जाती है। जो लोग इसे नये सिरे से देखते हैं आम तौर पर उन्हें अपने जीवनों के लिए इसकी कीमत का अहसास रहता है।

मिट्टी के बर्तनों में

मिट्टी के बर्तनों में खज़ाने के बात स्पष्टतया अपनी कमज़ोरियों, कमियों और भंजनशीलता के साथ मसीही सेवक को ही कहा गया है। परमेश्वर ने अपना खज़ाना किसी किले में या मज़बूत से मज़बूत सबसे सुरक्षित शीशे के बॉक्स में रखना नहीं चुना। परमेश्वर का खज़ाना भंजनशील मिट्टी के बर्तनों में रखा गया था।

मिट्टी के बर्तन का रूपक हमारे भंजनशील जीवनों के लिए इतना उपयुक्त है कि आमतौर पर बाइबल में इसे हमारी कमज़ोरी याद दिलाने के लिए इस्तेमाल किया गया है। भजन लिखने वाला कहता है, ''मैं टूटे बर्तन के समान हो गया हूं'' (भजन संहिता 31:12)। यिर्मयाह ने मनुष्य का वर्णन ''टूटे हुए बर्तन, निकम्मे बर्तन'' के रूप में किया है (यिर्मयाह 22:28)। परन्तु हमारे जीवन मिट्टी के बर्तन की तरह भंजनशील होने के बावजूद नबी लगातार हमें याद दिलाते हैं कि परमेश्वर निपुण कारीगर है, जो टूटने वाले भंजनशील बर्तनों को भलाई के लिए इस्तेमाल कर सकता है। परमेश्वर दिन के साथ काम करता और इसे अपने उद्देश्य के लिए आकार देता है (यिर्मयाह 18:1-11; तुलना यशायाह 29:16; 45:9)। अपनी कमज़ोरी में मिट्टी को कुम्हार की इच्छा का विरोध करने का अधिकार नहीं है (तुलना रोमियों 9:19, 20) क्योंकि वह निकम्मी

मिट्टी को लेकर इसे अपने हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सकता है।

पौलुस की बात कि ''हमारे पास यह धन मिट्टी के बर्तनों में रखा है'' इतनी स्पष्ट है कि हम मूल संदर्भ को आसानी से भूल जाते हैं। यदि पौलुस कटु अलोचना का शिकार न हुआ होता तो वह सम्भवतया यह टिप्पणी न करता। उसके विरोधियों ने इस आधार पर कि वह एक प्रामाणिक सेवक होने के लिए कमज़ोर है, उस पर सवाल किया था। उनका कहना था, ''कि उसकी पत्रियां तो गम्भीर और प्रभावशाली हैं; परन्तु जब देखते हैं तो वह देह का निर्बल और वक्तव्य में हल्का जान पड़ता है'' (10:10)। यह तो ऐसा था जैसे वह कह रहे हों, ''हमें तो उम्मीद थी कि सार्वजनिक स्थलों में भाषण देने वालों की तरह वह बिजली की तरह भाषण देने वाला होगा। शायद वह यह कह रहे थे, हमें किसी खूबसूरत और देवता समान अर्थात ओलंपिक खेलों के धावकों जैसे व्यक्ति की उम्मीद थी।'' परमेश्वर के वचन को सुनाने वाला पौलुस शायद ही वैसा था जैसा एक लीडर होने की दुनियादार कुरिन्थियों ने उम्मीद की थी। उसका जवाब इस बात को याद दिलाता था कि परमेश्वर ने शक्तिशाली और बेदाग बर्तनों के बजाय मिट्टी के भंजनशील बर्तनों में अपना खज़ाना रखना जान-बूझकर चुना था।

एक बार 1 कुरिन्थियों में पौलुस ने ऐसा ही तर्क दिया था जब उसने कुरिन्थयों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया था कि परमेश्वर मानवीय मापदण्डों के अनुसार नहीं चलता। वास्तव में परमेश्वर ने अपने आपको क्रूस के द्वारा जो लज्जा और निर्बलता का प्रतीक है, दिखाना चुना। फिर पौलुस ने आगे कहा, ''हे भाइयो, अपने बुलाए जाने को तो सोचो कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए'' (1 कुरिन्थियों 1:26)। पूरी कलीसिया ही ''मिट्टी के बर्तनों'' अर्थात ऐसे लोगों से बनी थी, जिनकी कोई अपनी शक्ति नहीं थी। परमेश्वर को अपने काम को बढ़ाने के लिए बुद्धिमान, शक्तिशाली और कुलीन लोगों की आवश्यकता नहीं थी।

यदि हम भूल जाते हैं कि परमेश्वर का धन ''मिट्टी के बर्तनों'' में रखा गया है तो हम कलीसिया के लिए गम्भीर समस्याएं खड़ी करते हैं। हर प्रकार के मीडिया सितारों को महत्व देने वाले हमारे समाज में, हम विचार से तर-ब-तर हो जाते हैं कि महत्वपूर्ण कार्यों के लिए ''सुपर स्टार'' होने आवश्यक हैं। हाल ही के वर्षों में एक बड़ी सुसमाचारीय लहर ने यह दिखाने कि मोहित करने वाले मीडिया स्टार विश्वास की सराहना करते हैं, एक विशेष बात की है। मान्यता यह लगती है कि किसी असाधारण गुण वाले व्यक्ति की उपस्थिति से विश्वास को विश्वसनीयता मिलती है।

यदि हम भूल जाते हैं कि परमेश्वर ने अपने खज़ाने को मिट्टी के बर्तनों में रखना चुना है, तो हम उनके साथ धैर्य खो देते हैं, जो हमारी अगुआई करते हैं। हम ऐल्डरों या प्रचारक के सरमनों के औसत होने की ''अयोग्यता'' पहचानने में उतावली करते हैं और फिर निष्कर्ष निकालते हैं कि यदि हर आराधना सभा टेलीविज़न के कार्यक्रम की तरह चिपकू ही होगी तो इससे कलीसिया का भविष्य बहुत बढ़ेगा। हम निष्कर्ष निकालते हैं कि कलीसिया तभी स्वस्थ हो सकती है यदि हमें ''सार'' की खूबी वाला कोई व्यक्ति मिल जाए।

एक अवसर पर, कलीसिया के कुछ लोग शिकायत कर रहे थे कि उनका प्रचारक ''इतना औसत'' था कि उसे त्याग-पत्र दे देना चाहिए, क्योंकि वह कलीसिया की असफलताओं का

बड़ा कारण था। किसी समझदार सदस्य ने उत्तर दिया, ''हां, पर हम तो 'औसत' मण्डली हैं।'' अधिकतर मण्डलियां औसत ही हैं। योग्यता का स्तर सहयोग के स्तर से हो सकता है न मिले। कार्यक्रमों के पूरा करने में अपेक्षित कुशलता की कमी हो सकती है और हो सकता है कि स्टाफ दूसरों के विरुद्ध सही मेल न खाता हो। परन्तु मुझे यकीन है कि यदि पौलुस के शब्दों को गम्भीरता से लिया जाए, तो हमें याद आ जाएगा कि पूरी कलीसिया ही टूट जाने वाले बर्तनों से बनी है।

इस समझ से हमें उन गलतियों के लिए धैर्य मिलना चाहिए जो हम दूसरों में देखते हैं। व्यवहारिक रूप में सब लोगों, जिन्होंने अपने आपको गम्भीरतापूर्वक शामिल किया हो गम्भीर गलतियां की हैं जिनका उन्हें अफ़सोस है। आमतौर पर हम में अपने निर्णयों के कामों का अनुमान लगाने की पर्याप्त दूरदर्शिता की कमी होती है। हमने विचारहीन टिप्पणियां की हैं, जिन्हें विचार किए जाने पर हम मानते हैं कि हमें उन्हें नहीं करना चाहिए था। ''मिट्टी के बर्तनों'' वाला समुदाय होने के कारण इसमें कुछ मानवीय असफलताएं पाई जाती हैं। जो कलीसिया इस तथ्य को याद रखती है, वह धैर्य से काम लेगी।

हम ''मिट्टी के बर्तनों'' के समुदाय हैं, इस कारण हमारे लिए उनके साथ धैर्य रखने की जगह है, जिन्होंने गम्भीर नैतिक अपराध किए हैं। ऐसी आत्मा है जो कभी उस भूल को जो बहुत पुरानी हो नहीं भुलाएगी। हम इस प्रकार से कार्य कर सकते हैं, जैसे कोई गलती किसी दूसरे व्यक्ति को किसी कार्यक्रम में भाग लेने से सदा के लिए अयोग्य बना देती है। परन्तु ऐसी आत्मा इस तथ्य को नज़रअंदाज़ कर देती है कि परमेश्वर अपने ''चुने हुए पात्रों'' के रूप में उनका इस्तेमाल कर सकता है, जिन्होंने गम्भीर अपराध किए हैं। उसने तो उस व्यक्ति को भी इस्तेमाल कर लिया, जिसने कलीसिया को सताया था।

यह तथ्य कि परमेश्वर ने ''मिट्टी के बर्तनों'' को इस्तेमाल करना चुना है, यह सुझाव नहीं देता कि हम अपनी अयोग्यता और अपनी नाकामियों को उसके कार्य के लिए पूर्णतया अपने आपको देने का प्रयास किए बिना मान लें। यह मान लेना कि परमेश्वर ने अपने पात्रों के रूप में भूल करने वाले लोगों को चुना है, पौलुस के संदेश को बिगाड़ना होगा। वह हम से कठोर समर्पण और बेहतरीन की मांग नहीं करता। प्रामाणिक सेवकाई में यह जानने की सुरक्षा है कि परमेश्वर हम जैसे टूट जाने वाले बर्तनों का इस्तेमाल कर सकता है, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी सीमाओं को आत्मसंतुष्ट होकर और सुधार का कोई प्रयास किए बिना मान लें। यह सच है कि परमेश्वर औसत वक्ता को और कोई प्रबन्ध करने व संगठन करने के किसी विशेष गुण रहित व्यक्ति को इस्तेमाल कर सकता है। परन्तु यह समझ कि हमारे पास खज़ाना है, हमें निरुत्साह और आत्मसंतुष्ट होने से रोकता है।

यह दिखाने के लिए कि सामर्थ परमेश्वर की है

परमेश्वर की सेवा करने के योग्य होने के लिए यदि केवल ''सुपर स्टार'' होते तो सामर्थ के स्रोत की हमें गलती लग सकती है। परन्तु यदि परमेश्वर मिट्टी के बर्तनों के द्वारा काम करता है तो सामर्थ स्पष्टतया उसी की है। 1 और 2 कुरिन्थियों में ''सामर्थ'' (*dynamis*) शब्द कई बार आया है (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:18, 24; 2:5; 2 कुरिन्थियों 12:9; 13:4), शायद उन

लोगों को जवाब देते हुए जो असाधारण काम करने की अपनी सामर्थ पर शेखी मारते थे। पौलुस अपने भाइयों को लगातार याद दिलाता है कि परमेश्वर ने मानवीय निर्बलता में दिखाने को चुना है (12:9; 13:4), क्योंकि तभी परमेश्वर की सामर्थ का पता चलता है। क्रूस की निर्बलता में ही परमेश्वर की सामर्थ का सबसे अधिक पता चलता था।

जेम्स एस. स्टुअर्ट ने बरमिंघम, इंग्लैण्ड में मूडी के काम के बारे में बताया है। मूडी के एक मिशनरी अभियान में प्रचार करते हुए कोई संदेहवादी निरीक्षक हर रात सभा में आलोचक दृष्टि से सुसमाचार प्रचारक के ढंग को देखने आता। अन्ततः वह मूडी के पास गया और कहने लगा, ''मैंने आपका यह मिशन देखा है, और इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि सचमुच में परमेश्वर है। मैं बताता हूं कि क्यों। क्योंकि मैं व्यक्तिगत रूप में आपके और आपके मिशन के परिणाम मिलने में कोई सम्भावित सम्बन्ध नहीं देख सकता। इसलिए अवश्य ही यह परमेश्वर का है!''[2]

पौलुस सुझाव देता है कि परमेश्वर हमारी कमियों के बावजूद नहीं, बल्कि उनके कारण हमें इस्तेमाल कर सकता है। यदि हम पौलुस के संदेश को गम्भीरता से लें तो हम सामर्थ के संसार के मानकों और अपने संसाधनों से राज्य को बनाने की अपनी कोशिश के विलक्षण खतरे को देख सकते हैं। यह गलती बार-बार अपने दानों को ज़ोर देने में पौलुस के विरोधियों ने की थी। प्रामाणिक सेवकाई में हमारा यह मान लेना शामिल है कि परमेश्वर सृजनहार कुम्हार है, जो हमें अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

गिराया गया, पर चित्त नहीं हुआ (4:8-15)

पौलुस के टूट जाने वाला बर्तन होने की बात 4:8, 9 की कविता भरी पंक्तियों में दर्ज है। चार समानांतर वाक्यांश उसके जीवन को मिट्टी के बर्तन के रूप में दिखाते हैं। हर वाक्यांश के पहले भाग में वह अपनी भंजनशील स्थिति का वर्णन करता है। वह ''क्लेश में पड़ा,'' ''संकट में पड़ा,'' ''निरुपाय हुआ,'' ''सताया गया'' और ''गिराया गया।'' ये शब्द किसी ऐसे व्यक्ति के बचावहीन होने का सुझाव देते हैं, जो उन बलों के आगे बेबस है, जो उसे कुचलते हैं। वह समझता है कि उसके पास अपना कोई संसाधन नहीं है। ये वाक्यांश उन अन्य आयतों से मेल खाते हैं जहां पौलुस उन कष्टों की बात करता है, जो उसे प्रामाणिक चेले के रूप में ''सराहते'' हैं (6:4-6; 11:23-29)। वह अपनी शानदार शक्तियों के लिए नहीं, बल्कि अपनी कमज़ोरी के लिए प्रसिद्ध है।

पौलुस की मंशा अपनी बहुत सी पेशियों पर ज़ोर देने की नहीं है, क्योंकि जब भी वह अपनी सेवकाई के भयंकर अनुभव की बात करता है, उसके बाद वह ''परन्तु नहीं'' वाक्यांश जोड़ देता है। यानी वह असहाय तो रहा परन्तु पराजित कभी नहीं हुआ। संसाधनों की कमी के बावजूद वह कुचला कभी नहीं गया। वह उन विशेष उदाहरणों की बात करता है, जहां परमेश्वर ने उसे बचाया कि जब उसे लगा कि वह सबसे अधिक असहाय है (तुलना 1:18-11)। पौलुस की बात कि वह ''दुखी तो हुआ ... पर कुचला नहीं गया'' हमें कष्ट सहने के उसके कई हवालों का स्मरण कराती है (1:4, 8; 2:4; 4:7; 6:4)। ''क्लेश'' के लिए शब्द (*thlipsis*) इतने कस कर ''दबाने'' या ''चापने'' का संकेत है कि वह जैसे ''कुचल दिया'' गया हो। NIV में इस आयत का अनुवाद सही है: ''हम हर तरफ से कसकर दबाए जाते हैं, पर कुचले नहीं जाते।''

मसीही की पहचान पीड़ा का न होना नहीं है, परन्तु यह तथ्य है कि वह इससे नष्ट नहीं होता।

पौलुस ''त्यागा नहीं गया,'' ''निराश नहीं हुआ'' और ''नष्ट नहीं हुआ।'' एक अर्थ में पौलुस ''निराश हुआ'' था (1:8), परन्तु इस अर्थ में नहीं कि उसने सदा के लिए छोड़ दिया था। उसका विश्वास बाइबल के अन्य लेखकों की तरह ही था कि चाहे दूसरे लोग हमें छोड़ दें (2 तीमुथियुस 4:10, 16) पर परमेश्वर नहीं छोड़ता। परमेश्वर कहता है, ''मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा'' (इब्रानियों 13:5)। उसे मालूम था कि ''मिट्टी के बर्तन'' होने के कारण कई बार हमें ''गिराया जाता'' है। अपने काम पर हम पर कई आक्रमण होते हैं। परन्तु हम ''नष्ट'' नहीं होते। जे. बी. फिलिप्स में 4:8 के अन्तिम वाक्यांश को इस प्रकार लिखा है, ''गिराए गए पर चित नहीं हुए।'' इसलिए प्रामाणिक मसीहियत की विशेषता उस आत्मा की बात है जो यह कहती है, ''पर नहीं'' न अर्थात न कुचले गए, न निराश हुए, न त्यागे गए और न नष्ट हुए। यह ''पर नहीं'' हमारे इस विश्वास में से निकलता है कि अपने मिट्टी के बर्तनों में परमेश्वर की सामर्थ काम करती है।

2 कुरिन्थियों की सबसे शानदार बात यह है कि एक पौलुस का बार-बार यह याद दिलाना है कि उसके कलेश उसे मसीह के सच्चे सेवक के रूप में ''सराहते'' हैं (6:4; 11:23-29; 12:8-11)। पौलुस कहता है कि उसकी निर्बलता यही दिखाती है कि वह ''यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरता'' है (4:10), क्योंकि यीशु एक बचावहीन मनुष्य था, जिसे सताया गया और मारा गया था। अपने शत्रुओं के लिए यीशु निर्बलता और मज़ाक था। पौलुस के अनुसार उसे ''निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया तो गया'' (13:4)। यीशु अपने सेवकों की तरह ''टूट जाने वाला बर्तन'' था जिसने दुख सहा और जो मर गया। सच्चे मसीही की पीड़ा और निर्बलता यीशु वाली ही है। पौलुस यीशु के कष्ट में अपने मिलने की बात करता है (फिलिप्पियों 3:10; गलातियों 2:20; 6:17)।

पौलुस यह कहता हुआ प्रतीत होता है कि सेवक के निर्बल होने और भंजनशील होने में कोई शर्म नहीं है। अपनी कई निर्बलताओं के साथ पौलुस अपने अन्दर हीन भावना को बढ़ावा दे सकता था। तुलना करने पर कई लोग ''स्टार'' जैसे थे। परन्तु पौलुस याद करता है कि यीशु स्वयं भंजनशील था। यरूशलेम में कइयों की नज़र में यीशु बहुत ही आम व्यक्ति था। उसका ठट्ठा उड़ाने वाले सिपाहियों ने उसमें कोई विशेष सामर्थ या महिमा नहीं देखी थी।

महान रूसी नावलकार आइवन टरगनेव ने एक दर्शन का वर्णन किया है जिसमें उसे यीशु की मानवीयता की समझ आई:

> मैंने अपने आपको एक युवा, लगभग एक लड़का देखा जो लकड़ी के एक ढलानदार चर्च में था। मेरे सामने सफेद बालों वाले किसान थे। बीच-बीच में वे झूलने, गिरने, फिर उठने लगते, जैसे गर्मी की हवा गेहूं के पक्के बालों पर से गुज़रती है। एक दम से एक आदमी पीछे से आया और मेरे पीछे खड़ा हो गया। मैं उसकी ओर मुड़ा नहीं, पर मुझे लगा कि वह आदमी मसीह है। भावना, जिज्ञासा, भय ने मेरे ऊपर काबू पा लिया। मैंने प्रयास करके अपने पड़ोसी की ओर देखा। एक चेहरा जो किसी भी दूसरे व्यक्ति की तरह था, एक चेहरा जो सब लोगों के चेहरों जैसा था। ''यह कैसा मसीह है?'' मैंने सोचा।

इतना आम, सादा व्यक्ति। ऐसा नहीं हो सकता।

वह यह समझ नहीं पाया कि मसीह का चेहरा सब लोगों के चेहरे जैसा था। देहधारण करने का अजूबा यह है कि परमेश्वर ने मनुष्य अर्थात मिट्टी के बर्तन के द्वारा बात करना चुना न कि सुपर मैन के द्वारा जो पत्थर को रोटियां बना दे, मन्दिरों से उछल सके या लोगों को अपने पीछे चलने के लिए विवश कर सके।

हमारे लिए यह मानना आवश्यक है कि यीशु ने महानता को ''अपने आपको खाली'' करने (फिलिप्पियों 2:7) और एक अर्थ में आम आदमी बनने को चुना। फिर हमें जी उठने की महिमा को स्वीकार करने के लिए तैयार किया जा सकता है, जब परमेश्वर की सामर्थ निर्बलता में दिखाई गई। पौलुस जानता है कि जब वह भंजनशील होता है तभी परमेश्वर की पुनरुत्थान की सामर्थ, अर्थात उसका ''जीवन'' (4:11) उसके जीवन में हो सकता है। पौलुस का बार-बार ''परन्तु नहीं'' एक ऐसे व्यक्ति के भरोसे का शब्द है जिसे मालूम है कि जो लोग मसीह की निर्बलता में सहभागी होते हैं वे उसकी सामर्थ में भी सहभागी हैं। जैसे पौलुस बाद में कहता है, ''जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं'' (12:10)।

सारांश

अपनी सेवकाइयों में परमेश्वर की सामर्थ को खोजने की पूरी शर्त दोस्ती के लिए नगर में सबसे प्रभावशाली लोगों को पाना, सबसे योग्य स्टाफ होना, या सबसे अधिक सुधिाएं होने में है, क्योंकि फिर तो हम अपनी सामर्थ को दिखा रहे होंगे। मसीही जीवन की पहचान राजनैतिक शक्ति का इस्तेमाल नहीं है क्योंकि उसमें भी उनकी अपनी ही सामर्थ होगी। परमेश्वर की सामर्थ केवल तभी होती है जब हम अपने आपको दांव पर लगाकर मान लेते हैं कि हम तो मिट्टी के बर्तन हैं। वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ उस व्यक्ति के अनुभव में सबसे अधिक नाटकीय ढंग से दिखाई गई थी, जो अपने शत्रुओं के हाथों असहाय मरा था।

टिप्पणियां

[1]जेम्स एस. स्टुअर्ट, *दि विंड ऑफ़ द स्पिरिट* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1975), 19. [2]वही, 23.